CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता को बढाने में विभिन्न नवाचारों का योगदान

सन्तोष शर्मा
पीएचडी शोधार्थी
डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर

First draft received: 15.09.2024, Reviewed: 18.09.2024, Final proof received: 21.09.2024, Accepted: 23.09.2024

सार संक्षेप

शिक्षण एक कला है-जिसके विशिष्ट शिक्षण कौशल होते हैं। एक प्रभावशाली शिक्षण में विशेष शिक्षण कौशलों का समावेश होता है, एक अच्छा शिक्षक उन्हें अपने कक्षा शिक्षण में उपयोग करता है। कक्षा में शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु अद्यतन व नवीन प्रविधि एवं शिक्षण-व्यूहरचना का उपयोग करता है। बहुधा देखा भी गया है कि विद्यालयों में अप्रशिक्षित शिक्षक एक प्रशिक्षित अध्यापक से अच्छे स्तर का शिक्षण कराने में सक्षम हो जाता है। इसका कारण स्पष्ट है कि वह प्रभावी शिक्षण की प्रविधि में दक्षता रखता है। यही दक्षता शिक्षण-कौशल कहलायी जा सकती है। बालक सहजता से पाठ्यवस्तु को अधिगम कर आत्मसात् करें, इसके लिए शिक्षक को पाठ नियोजन करना अधिक उपयुक्त होता है। ताकि शिक्षक पाठ्यवस्तु पर अधिकार करके कक्षा में समयानुसार शिक्षण- कौशलों का अधिकाधिक उपयोग कर अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकेगा।

प्रस्तावना

मनुष्य को परमात्मा की सर्वोत्तम कृति कहा गया हैं। फिर भी मनुष्य का स्वभाव गलती करना हैै गलती में सुधार कर अपने कार्यो को परिष्कृत करने की क्षमता भी मनुष्य में हैं। बालक जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त कुछ न कुछ सीखता हैं । बालक सीखने की इस प्रक्रिया में गलती भी करता है गलती करने पर घर के, परिवार के सदस्य व विद्यालय में अध्यापक उन गलतियों के कारण को जानकर उनमें सुधार करवाने का प्रयास करते है। वर्तमानकालीन षिक्षा मे अध्यापक का केंद्र बिंदु विद्यार्थी होता है जिसके माध्यम से वह अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाता है शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता में अध्यापक शिक्षा का निरंतर विकास, विकास के सूचक पाठ्ाचर्या, शोध, इंटर्नशिप कार्यक्रम, नेतृत्वषीलता, क्षमता अभिवर्धन कार्यक्रम, सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी, प्रबंधन व मूल्यांकन इन सभी का महत्वपूर्ण योगदान होता है । 'शिक्षक' शब्द का शाब्दिक अर्थ ''सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को संपादित करने वाला'' चूॅकि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया लगातार चलती है, अतः शिक्षक की शिक्षण विकास की आवश्यकता निरंतर बनी रहती है।

शिक्षक प्रभावशीलता से तात्पर्य शिक्षक की गुणवत्ता और शिक्षकों की क्षमता दोनों से है इसके लिए शिक्षक को मूल्यांकन आत्मक मानसिकता अपना कर अभ्यास को लगातार बढ़ने की आवश्यकता होती है शिक्षक प्रभावशीलता किसी भी व्यक्ति के भीतर की विशेषता है जो छात्रों के नीतियों को प्रभावित करती है शिक्षक प्रभावशीलता को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह अनुसंधान और लक्ष्य आधारित प्रयासों का समूह है प्रभावशाली शिक्षक के लिए अनुसंधान आधारित रणनीतियों और सृजनात्मकता के बीच संतुलन बनाना जरूरी है

शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित तथ्य

शिक्षण एक कला है-जिसके विशिष्ट शिक्षण कौशल होते हैं। एक प्रभावशाली शिक्षण में विशेष शिक्षण कौशलों का समावेश होता है, एक अच्छा शिक्षक उन्हें अपने कक्षा शिक्षण में उपयोग करता है। कक्षा में शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु अद्यतन व नवीन प्रविधि एवं शिक्षण-व्यूहरचना का उपयोग करता है। बहुधा देखा भी गया है कि विद्यालयों में अप्रशिक्षित शिक्षक एक प्रशिक्षित अध्यापक से अच्छे स्तर का शिक्षण कराने में सक्षम हो जाता है। इसका कारण स्पष्ट है कि वह प्रभावी शिक्षण की प्रविधि में दक्षता रखता है। यही दक्षता शिक्षण-कौशल कहलायी जा सकती है। बालक सहजता से पाठ्यवस्तु को अधिगम कर आत्मसात् करें, इसके लिए शिक्षक को पाठ नियोजन करना अधिक उपयुक्त होता है। ताकि शिक्षक पाठ्यवस्तु पर अधिकार करके कक्षा में समयानुसार शिक्षण- कौशलों का अधिकाधिक उपयोग कर अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकेगा।

शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को कक्षा-शिक्षण के समय पाठ-योजना में निर्धारित क्रियाकलापों के अतिरिक्त शिक्षण परिस्थितियों के अनुसार भी तुरन्त परिवर्तन हेतु निर्णय लेने पड़ते हैं। स्पष्टतः जो शिक्षक इन अपेक्षित परिवर्तनों को शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं, जिज्ञासाओं, आकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं को देखते हुए उचित प्रकार से कर लेता है, प्रभावी शिक्षण कार्य कर शिक्षार्थियों में लोकप्रिय हो जाता है। आजकल विद्यालयों व महाविद्यालयों में 'सूक्ष्म-शिक्षण' के अन्तर्गत प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न शिक्षण-कौशलों का व्यावहारिक रूप में अभ्यास एवं विकास कराया जाता है ताकि एक 'प्रभावशाली शिक्षण' कराने हेतु उनके प्रयोग करने में अभ्यस्थ हो जाएं। उनके व्यवहारों में वांछित परिवर्तन व परिमार्जन किया जाता है। सूक्ष्म-शिक्षण से विशिष्ट शिक्षण-कौशलों का विकास करने के लिए वास्तविक कक्षा की जटिलता दूर करके शिक्षण के कार्य को 'लघु रूप' में सम्पन्न कराया जाता है। शिक्षण का मुख्य उद्देश्य उचित अधिगम-अनुभव करवाकर अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन लाना है। इस प्रकार शिक्षण में प्रभावशीलता लाने के लिए शिक्षक को परम्परागत शिक्षा-शिक्षण प्रणाली के स्थान पर शैक्षिक नवाचारों का उपयोग करना अत्यावश्यक व अपरिहार्य हो गया है। अतः शिक्षण-प्रभावषीलता से अभिप्राय होगा कि छात्र के अधिगम की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावशाली बनाए जाए? जिससे वह अधिकाधिक अनुभव व अधिगम अर्जित कर उन्हें अपने व्यवहार में परिलक्षित कर सके। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक छात्र को सूचना प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रविधियों का उचित समय पर प्रयोग कर उसे प्रभावी बनाता है। एक सफल शिक्षण-प्रक्रिया वही कहलाएगी जिससे प्रत्यक्ष रूप से शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन प्रगटीकरण हो सके, अन्यथा वांछित अधिगम के बिना शिक्षण का कोई औचित्य नहीं होगा।

एक षिक्षक अपने विषय को अच्छी तरह से जानता है शिक्षक प्रभावशीलता में शिक्षक प्रत्येक छात्रों की प्रगति पर नजर रखते हैं और उनसे फीडबैक लेते हैं । प्रभावी शिक्षण में कक्षाओं को अभ्यास करता हूं और बच्चों के बीच सहयोग के रूप में डिजाइन किया जाता हैं।

शिक्षक प्रभावशीलता के मॉडल

शिक्षक प्रभावशीलता का तात्पर्य व्यक्ति के भीतर की विशेषताओं के एक समूह से है जो व्यक्तित्व प्रेरणा विश्वास और स्वभाव जो छात्रों के परिणाम को प्रभावित करने के लिए प्रासंगिक कर को के साथ अंतर क्रिया करते हैं शिक्षक प्रभावशीलता के कुछ मॉडल बड़े पैमाने पर सीखने के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिससे शिक्षक शिक्षा और पेशेवर शिक्षा शामिल है जो निम्न प्रकार से हैं-

शिक्षक शिक्षा

शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए अनिवार्य है कि अध्यापकों में व्रत एक शिक्षक का एक समुचित कार्यक्रम हो अध्यापकों की शिक्षा व्यवस्था में कोठारी आयोग ने गंभीरता पूरक विचार किया इसमें शिक्षा का स्तर तो ठीक होगा ही और हमारे राष्ट्र निर्माण का प्रश्न भी हाल होगा शिक्षक शिक्षा या शिक्षक प्रशिक्षण का तात्पर्य उन कार्यक्रम नेशन प्रक्रियाओं और प्रावधानों से है जो भाभी शिक्षकों को ज्ञान दृष्टि को व्यवहार कार्य प्रणाली और कौशल से युक्त करने के लिए डिजाइन किए गए हैं

पेशेवर शिक्षा

जब एक अध्यापक पेशेवर विकास की सतत् प्रक्रिया में अपने को सम्मिलित करता है तो उसके विचारों में तेरो के बजाय ग्राहता आ जाती है वह नए-नए विचारों को ग्रहण करने और उनके विश्लेषण में स्वयं को आनंदित महसूस करता है वह अहंकार सुनने होकर सीखने सिखाने की प्रक्रिया में विद्यार्थी और अपने को सहभागी के रूप में स्वीकार करने लगता है वह बच्चों को स्वयं अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने लगता है वह स्वयं चिंतन करता है और विद्यार्थियों को भी चिंतन करने और कई तरह के सवाल जवाब करने में प्रेषित करता है और और उसे इस हेतु आवश्यक भी प्रदान करता है जिस दिन व्यक्ति अपने आज युवा के रूप में अपने अध्यापन पेशे का चयन करता है उसी दिन अध्यापक संबंधित पेशेवर विकास की पहली सीडी के कदम रख लेता है अध्यापक बनने की प्रक्रिया अध्यापक के रूप में नौकरी पाने के उपरांत समाप्त नहीं हो जाती यहां से यह प्रक्रिया नहीं आया मुंह को प्राप्त कर आगे बढ़ती है इस प्रकार अध्यापक की पेशेवर विकास में निरंत का स्वाभाविक गुण हैं।

प्रभावी शिक्षण के तत्व/घटक

शिक्षण एक जटिल प्रक्रिया है। एक आदर्श शिक्षक का दायित्व है कि वह कक्ष- शिक्षण के समय शिक्षण-प्रक्रिया को प्रभावकारी बनाए रखने का प्रयासरत रहे। शिक्षण प्रभावकता हेतु शैक्षिक नवाचारों, प्रविधिध्विधि, शिक्षण पद्धतियों का निर्माण कर इन माध्यम से जटिल शिक्षण-प्रक्रिया को सरलतम बनाया जा सकता है। स्पष्टतः शिक्षण प्रभावकता को अनेक घटक प्रभावित करते हैं। अतएव शिक्षण को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित घटक हैं-

1. सामाजिक वातावरण
2. शिक्षक शिक्षार्थी अंतः क्रिया
3. पारिवारिक एवं विद्यालय वातावरण
4. शिक्षक व्यवहार
5. छात्र का बौद्धिक स्तर
6. विषय वस्तु शिक्षण अधिगम सामग्री
7. निदान तथा उपचार
8. छात्र की आवश्यकता

शिक्षक प्रभावशीलता की विशेषताए

1. छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करना ।
2. छात्रों के सीखने के लिए अनुकूल माहौल बनाना रुचिकर शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग करना।
3. दैनिक जीवन में उदाहरण को जोड़कर पढना।
4. छात्रों में जिज्ञासा जागृत करना।
5. छात्रों के सम्मुख शिक्षण सामग्री को उनकी योग्यता के अनुरूप प्रयोग करना।
6. निर्देशात्मक रणनीतियों का प्रयोग करना।

शिक्षण में नवाचार

आज के युग को तकनीकी क्रांति का युग कहा जाता है। वर्तमान युग में जितनी तीव्र गति से तकनीकी विकास हुआ है उतना पहले कभी नहीं हुआ विशेष कर शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रयोग अपरिहार्य रूप से बढ़ता जा रहा है शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुधार बनाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व मल्टीमीडिया की भूमिका आज अनिवार्य हो गई है शिक्षा में नवाचार का महत्व मतलब नए विचारों वीडियो और तकनीक

का प्रयोग करके शिक्षक व शिक्षार्थी अपने शिक्षक व अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बना सकते हैं शिक्षक शिक्षा पद्धति में नवादा शिक्षकों पर निर्भर करता है शिक्षक नवाचार के द्वारा नवीन शिक्षण विधियां एवं पढ़ने के तरीकों में परिवर्तन करके बच्चों को उनके कौशल एवं प्रतिभा से अवगत करा सकते हैं शिक्षक को सुधार बनाने हेतु सर्वप्रथम शिक्षकों के नवीन ज्ञान कौशल दक्षता शिक्षण शिक्षण विधियां तकनीक को अनुसंधान नवाचार का ज्ञान व व्यावहारिक प्रयोग में पारंगत होना आवश्यक है नवीन शैक्षिक परिस्थितियों में विद्यार्थियों के साथ संबंध बनाने के लिए शिक्षकों को स्वयं को नए तरीकों से अवगत होने की आवश्यकता है आज वीडियो इंटरनेट ब्रॉडकास्ट का समय है बच्चे इन इंटरएक्टिव मीडिया के माध्यम से आसानी से सीख सकते हैं इसीलिए शिक्षकों को वर्तमान प्रौद्योगिकी के साथ अपने आप को निरंतर बनाए रखना होगा।

शैक्षिक नवाचार की पद्धतियां

एक अच्छी शिक्षक को विभिन्न शैक्षिक नवाचारों से अवगत होना अत्यंत आवश्यक है जिससे वह अपने शिक्षक का अधिगम प्रक्रियाओं को सहज सरल बनाने के साथ इस हेतु शिक्षा में प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न शैक्षिक नवाचार प्रक्रिया प्रयोग कर सके शैक्षिक नया चरणों में ऐसे तो बहुत सी विधियां या पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है जिनमें से निम्न प्रमुख-

प्रभावी शिक्षण में शिक्षक के कार्य-

1. पाठ योजना का निर्माण करना।
2. विशेष सामग्री का चयन एवं संगठन।
3. विभिन्न रीतियों का प्रयोग करना।
4. अधिगम हेतु दिशा एवं मार्गदर्शन करना।
5. मूल्यांकन।
6. प्रभावी नैतिक गुण।

प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षक की भूमिका

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण क्रिया है जिसका उद्देश्य शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना है। जिस शिक्षण के द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है। वह प्रभावशाली शिक्षण होता है। प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि शिक्षक शिक्षा जगत का मेरूदण्ड होता है जो व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। लाखों-करोड़ों अधिगमकत्र्ता शिक्षक से कुछ सीखने की आशा में उसके पास आते हैं। शिक्षक उनकी इस आशा को सार्थक बनाता है। एक कहावत प्रचलित है- 'शिक्षक जन्मजात् होते हैं, बनाये नहीं जाते हैं' परन्तु अब यह कहावत चरितार्थ नहीं होती हैं क्योंकि अब प्रशिक्षण संस्थाओं में शिक्षण कौशल का विकास कर शिक्षक बनाये जा रहे हैं तथा प्रभावी शिक्षण के हर स्तर के लिये तैयार किये जा रहे हैं। इसका कारण है-औपचारिक शिक्षा का प्रसार होना तथा जन्मजात शिक्षकों की कमी होना। परन्तु क्या यह प्रशिक्षित शिक्षक जन्मजात शिक्षक की तुलना कर पा रहे हैं? शिक्षक अपने प्रशिक्षण के माध्यम से अधिगमकर्त्ता को अधिगम करने में सहायता करने का कौशल प्राप्त कर लेता है। प्रशिक्षण में शिक्षक को इस कौशल अर्जन हेतु अनेक सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक कार्यक्रम दिये जाते हैं। जिनके माध्यम से वह प्रभावी शिक्षण करने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष

प्रभावशाली शिक्षण के लिए शिक्षक को अपने षिक्षण में नवाचारों को समाहित कर पाठ्यसामग्री को तैयार करना चाहिए। जिससे बालक शिक्षण को अधिक सहजता व सरलता से ग्रहण कर सकें। वर्तमान समय तकनीकी का है जिसमें शिक्षक को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व मल्टीमीडिया की भूमिका आज अनिवार्य हो गई हैं अतः षिक्षक को अपने षिक्षण में नवाचारों का प्रयोग करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ढाका गुरूदत्त सिंह (2022) उच्च माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों में षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनकी षिक्षण प्रभावषीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. चैहान रीना सिंह सरवेष (2021) शिक्षकों की प्रभावशीलता का भावनात्मक बुद्धिमत्ता, योग्यता और रचनात्मकता पर अध्ययन।
3. कुमार अनिल, शर्मा ममता (2021) माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य की संतुष्टि में षिक्षक की प्रभावषीलता का अध्ययन।
4. डाॅ. अर्चना कुलश्रेष्ठ, डाॅ. अंकुष षर्मा व डाॅ रीता विष्ट 2021 अधिगम और षिक्षण।
5. डाॅ.सत्यनारायण षर्मा 2016 अधिगम और षिक्षण।
6ण डाॅ. अषांेक सिडाना 2015 अधिगम और षिक्षण।